

Perfectionism (आत्मपूर्णतावाद) [1]

आत्मपूर्णतावाद के अनुसार अन्य सभी नैतिक सिद्धांतों का खण्डन कर आत्मा की पूर्णता या आत्मासिद्धि को ही नैतिक मानकों स्वीकार करता है। इस मत के अनुसार जिस कार्य से आत्मा की पूर्णता हो भववा आत्म-सिद्धि हो वही कार्य नैतिक दृष्टि से उचित है। आत्मा की पूर्णता हमें शरीर सुख, बाह्य नियम और बुद्धि के आदेशों में नहीं मिलती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सुखवाद, बाह्य नियमवाद, काण्ट का बुद्धिवाद भादि सभी मत अपूर्ण हैं जैसे:- सुखवाद के अनुसार सुख प्राप्त करना मनुष्य के स्वभाव में ही है। मनुष्य के लिए उचित कार्य वही है जिसमें सुख की प्राप्ति हो। किन्तु केवल सुख की प्राप्ति तो जीवन का लक्ष्य नहीं हो सकता। सुख भावनाओं की संतुष्टि है लेकिन मनुष्य केवल भावनात्मक प्राणी नहीं है। मनुष्य केवल इच्छाओं और वासनाओं को संतुष्ट करने के लिए ही सभी कार्य नहीं कर सकता है अतः सुखवाद सकारणी मत हुआ अतः अपूर्ण है।

इसके विपरीत देखें तो बुद्धिवाद के बौद्धिक नियमों अथवा विवेक के आदेशों के अनुसार कार्यों को करने के लिए कहता है। बुद्धि के नियम वासनाओं का पूर्णतः दमन करती है। और बुद्धि के नियम के अनुसार जीवनयापन का आदेश देती है। बुद्धि के नियम बहुत ही कठोर हैं। मनुष्य बौद्धिक होने के साथ ही साथ भावनात्मक भी है अतः केवल बौद्धिक

नियमों को स्वीकार करना स्वभावतः उसके लिए कठिन है। इस प्रकार कान्ट का बुद्धिवाद भी रुकांगी एवं अपूर्ण है।

एक ऐसा सिद्धान्त जिसमें बुद्धि एवं भावना दोनों का समावेश हो। यह हमें आत्मपूर्णतावाद नैतिक नियम में देखने को मिलता है। इसमें भावना एवं बुद्धि दोनों का ही समन्वय है।

आत्मपूर्णता का अर्थ आत्मासिद्धि या मनुष्य का सम्पूर्ण कल्याण से है। अतः इसे कल्याणवाद भी कहते हैं। व्याक्तित्व का पूर्ण विकास सर्वांगीण विकास है जिसमें मनुष्य भावना एवं बुद्धि का समुचित विकास करता है। इसमें मनुष्य का पूर्ण विकास होता है। अतः इसे पूर्णतावाद के नियन्त्रण में संतुष्ट होना ही व्याक्तित्व या आत्मा की समग्र पूर्णता है। अतः इसे आत्मकल्याणवाद या आत्म-प्रसादवाद भी कहा जाता है। व्याक्ति का यथार्थ कल्याण भावनाओं के दमन में नहीं वरन् इनके बौद्धिक नियन्त्रण में है। मनुष्य विवेकशील पशु (Man is a rational animal) है। अतः मनुष्य पाशाविक प्रवृत्तियों को पूर्णतः त्याग नहीं कर सकता। केवल विवेक द्वारा वासनाओं को नियन्त्रित कर सकता है। इस प्रकार आत्मपूर्णतावाद मानव जीवन में विवेक या बुद्धि के साथ-साथ भावनाओं को भी उचित महत्व प्रदान करता है।

आत्मपूर्णतावाद की विशेषताएँ (Characteristics of Perfectionism)

1. आत्मपूर्णतावाद व्याक्ति के समग्र व्याक्तित्व के विकास का सिद्धान्त है। व्याक्ति के सम्पूर्ण व्याक्तित्व में वासना और विवेक दोनों का ही योगदान है। दोनों का समन्वय ही व्याक्ति का पूर्ण विकास है।

- 2. व्याक्ति का सम्पूर्ण विकास समाज में ही सम्भव है। समाज से पृथक व्याक्ति का विकास सम्पूर्ण है। आत्मपूर्णतावाद के अनुसार व्याक्ति और समाज में अवयव-अवयवी या भंग-भंगी भाव का सम्बंध है। व्याक्ति समाज रूपी शरीर का भंग है और समाज व्याक्ति का शरीर है। सामाजिक कल्याण में व्याक्तिगत कल्याण स्वतः निहित है। आत्म-पूर्णता, सामाजिक हित में ही है।
- 3. आत्मपूर्णतावाद के अनुसार सर्वोच्च शुभ (Highest good) आत्म-सीद्धि (Self actualisation) है। यह आत्मसीद्धि हमारी सभी प्रकार की क्षमताओं का विकास करने में है। व्याक्ति में मानसिक एवं शारीरिक दोनों ही प्रकार की क्षमताएँ हैं। हमें विशेष लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दोनों प्रकार की क्षमताओं का प्रयोग करना चाहिए। यही व्याक्तित्व का पूर्ण विकास है।
- 4. आत्मपूर्णतावाद स्वार्थवाद और परार्थवाद का समन्वय करता है। स्वार्थवाद एवं परार्थवाद दोनों एक दूसरे के विपरीत हैं। स्वार्थवाद में निजी सुख ही वांछनीय है तथा परार्थवाद सामाजिक सुख को वांछनीय मानता है। पूर्णतावाद इन दोनों का समन्वय करते हुए कहता है कि सामाजिक कल्याण करने में ही व्याक्ति का कल्याण सम्भव है।
- 5. पूर्णतावाद सुखवाद और बुद्धिवाद का समन्वय करता है। सुखवाद में सुख प्राप्त करना जीवन का ह्येय है एवं बुद्धिवाद, बौद्धिक नियमों को जीवनयापन के लिए स्वीकार करता है। दोनों ही मत विपरीत हैं। पूर्णतावाद दोनों का समन्वय करते हुए कहता है कि भावनाओं को बुद्धि के द्वारा नियंत्रित होना चाहिए।

Savitri Kishore
15/04/2020